VOL- VII ISSUE- IX SEPTEMBER 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

भारत विभाजन और इस्लामी राष्ट्रवाद की छवि' 'आधा गाँव' के संदर्भ में

उस्मान सत्तारमियाँ शेख
शोधार्थी,
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय हैदराबाद,

"मैं वोटर नहीं हूँ...मैं मुसलमान हूँ | लेकिन इस गाँव से मोहब्बत है, क्योंकि मैं खुद यह गाँव हूँ | मैं नील के इस गोदाम, इस तालाब और इन कच्चे रास्तों से प्यार करता क्योंकि ये मेरे ही मुख्तलिफ रूप है | मैदाने- जंग में जब मौत बहुत करीब आ जाती थी तो मुझे अल्लाह जरुर याद आता था, लेकिन मक्कए-मुअज्जमा या कर्बलाए मुअल्ला की जगह मुझे गंगौली याद आती थी |"

उपनिवेशवाद के गुलामी एवं शोषण से देश आज़ाद हो रहा था तो दूसरी ओर विभाजन के कारण हिन्दू- मुस्लिम समाज के दिलों में दुरी पनप रही थी, इसी दुरी एवं अविश्वास के कारण भारत में सांप्रदायिक दंगों ने अपनी जगह बनाई है |भारत का विभाजन शांत तरीके से नहीं हुआ था अनेक बेकसूर लोगों की जान जा चुकी थी इतना ही नहीं इस विभाजन का सबसे ज्यादा प्रभाव तो नारी समाज को झेलना पड़ा क्योंकि बटवारें के समय नारियों के साथ बदसलूकी एवं उनकी इस्मत को लुटा जाना आम बात हो गई थी | यह नारियां चाहे हिन्दू समाज की हो या मुस्लिम समाज की वह प्रताड़ना की शिकार हमेशा रही है | बटवारें के पश्चात मुस्लिम समाज को अपने देशभक्ति का प्रमाणपत्र देना अनिवार्य हो गया था लेकिन मुस्लिम समाज का वह तबका जो गाँव एवं देहात में रहता था उसे इस विभाजन से कोई लेना देना नहीं था वह अपने ही गाँव को भारत समझ रहा था, लेकिन मुस्लिम लीग के प्रचारकों की आवाज इस गाँव में भी सुनाई दे रही थी परन्तु फुन्नन मियां,कम्मो जैसे पात्र अपने तार्किकता के कारण उपन्यास में अलग छवि छोड़ जाते हैं और राष्ट्रवाद को पुख्ता साबित करते है | गाँव का बहुत बड़ा तबका कल्पित जिन्ना के पाकिस्तान के बजाय भारत में ही रहना अधिक सुरक्षित महसूस करता था |

साहित्य की कोई भी विधा हो उसमे साहित्यकार का समकाल चित्रित होता है, इसी कारण कृति महान बनती है | रचनाकार अपनी कल्पना एवं संवेदना के सहारे समाज के गहरे बिन्दुओं पर कलम चलाता है | हिंदी साहित्य में विभाजन की पृष्टभूमि पर लिखित उपन्यासों में 'झूठा सच', 'आधा गाँव' और 'तमस' का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है | इन उपन्यासों में निर्मित भारतीय मुसलमान की उलझन को न जिन्ना साहब के 'दो राष्ट्र सिद्धांत' से सुलझाया जा सकता है न ही 'रास्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की वैचारिक्ता में इसका हल ढूंढा जा सकता है | भारतीय विभाजन को स्वीकार करनेवाले एवं उनका विरोध करनेवाले समाज में मौजूद थे लेकिन विभाजन का विरोध करनेवालों का उल्लेख कम ही किया जाता है, इसी के कारण भारतीय मुसलमान की राष्ट्रीयता पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है कि भारत का मुसलमान पाकिस्तान का हेतैशी है ? हिंदी साहित्य के रचनाकारों ने अपने समाज में व्याप्त सच्चाइयों को उजागर करते हुए यह बताया है कि मुस्लिम समाज का एक बड़ा तबका पाकिस्तान की बजाय भारत में ही रहना अधिक पसंद करता है | 'आधा गाँव' उपन्यास में गंगौली गाँव का चित्रण किया गया है यह गाँव भारत के उन तमाम ऐसे गाँवों का चित्रण करता है जिससे अलग होकर भारतीय मुसलमान पाकिस्तान नहीं जाना चाहता | राही मासूम रज़ा अपने उपन्यासों के माध्यम से उन तमाम शक्तियों का विरोध करते है जिससे हिन्दू-मुस्लिम समाज के दिलों में दुरी उत्पन्न हो | विभाजन ने भारतीय समाज को अन्दर तक झकझोर दिया था मजहब के आधार पर भारत का विभाजन अपने आप में दुःख स्थिति है जिसका चित्रण उपन्यास में हुआ है, विभाजन में दंगें, हत्याएं,

नारियों पर आत्याचार और लुट आम हो गई थी | 'आधा गाँव' उपन्यास अपने आप में विभाजन के समय मुस्लिम समाज की मनौवैज्ञानिक्ता के साथ-साथ पाकिस्तान विमर्श को तार्किकता से प्रस्तुत करता है | भारत विभाजन के समय ऐसी अनेक ताकतें थी जो हिन्दू- मुस्लिम समाज के मध्य नफ़रत पैदा कर रही थी | जब मस्जिद में नमाज पढ़ने के पश्चात मौलाना द्वारा तकरीर में कहा गया कि "हम ऐसे मुल्क में रहते हैं जिसमें हमारी हैसियत दाल में नामक से ज्यादा नहीं है | एक बार अंग्रेजों का साया हटा तो ये हिन्दू हमें खा जायेंगे | इसीलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों को एक ऐसी जगह की जरुरत है जहाँ वह इज्जत से जी सकें |" इस प्रकार से मुस्लिम समाज को हिन्दू समाज से दूर किया जा रहा था लेकिन राही के पात्र इस प्रकार के वैचारिकी का विरोध करते है | हाजी साहब जब घुस्से से मस्जिद के बाहर आ जाते है तब वे सोचते है कि "मुसलमानों को यह एकदम से एक पनाहगाह की जरुरत क्यों आ पड़ी है | और अंग्रेजों का साया कहाँ है जिसकी बात लड़कों ने इस धूमधाम से की थी | गंगौली में अब तक कोई अंग्रेज देखा नहीं गया था | और जब अंग्रेज हिंदुस्तान में नहीं थे, तब आखिर हिन्दुओं ने मुसलमानों को क्यों नहीं मार डाला ? और बुनियादी सवाल यह था कि जिंदगी-मौत खुदा के हाथ में है या अंग्रेजों और जिन्हा साहब के हाथ में ?" 'आधा गाँव' में राही ने ऐसे पत्रों की कल्पना की है जो अपनी ग्रामीण तार्किक्ता के कारण अलीगढ़ से आये मुस्लिम लीग के प्रचारकों को निरुत्तरित कर देते हैं | राही अपने उप्यासों में अपने पत्रों की राष्ट्रीयता खतरे में नहीं डालना चाहते हैं इसी कारण उनके पात्र स्पष्ट रूप से कहते है कि गंगौली मेरा गाँव है लेकिन मक्का मेरा शहर नहीं है यह (गंगौली) मेरा घर है काबा अल्लाह मिया का | उनके पात्र अपने गाँव एवं मिट्टी भिन्न नहीं होना चाहते जो पाने वतन वं गाँव से दूर है उसके साथ राही खड़े नहीं होते | गंगौली गाँव अपने-आप में भारत के समग्र गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इस गाँव में वे तमाम घटनाये यहाँ घटित होती है जो भारतीय गाँवों में दृष्टव्य है | फुन्नन मियां यह सवाल करते है कि 'जिन्हा साहब कहाँ के बाडन?' इसी कारण फुन्नन मियां का चरित्र अधिक यथार्थ एवं विश्वसनीय प्रतित होता है उनकी राष्ट्रीयता काल्पनिक न होते हुए यथार्थ पर आधारित दिखाई देती है | इस संदर्भ में वीरेंद्र यादव कहते है कि "राही मासूम रज़ा की खूबी यह है कि वे अपने सैद्धांतिकी व वैचारिक निष्पत्तियों को प्रतिपादित करने के लिए औपन्यासिक पत्रों की रचना नहीं करते बल्कि औपन्यासिक पत्रों को उस जीवन राग से सराबोर करते है जो सिद्धांत को यथार्थ से प्रतिस्थापित कर देता है| |" राही मासूम रज़ा इतिहास के उन प्रसंगों पर प्रकाश डालते हैं जो समाज के स्थानीय मनुष्य की संवेदना को व्यक्त करते हैं | राही के पात्र भली-भांति यह जानते है कि पाकिस्तान का निर्माण एक राजनीतिक खेल है और इस सियासत में साधारण मुसलमान की छवि को बिगाड़ा जा रहा है | उन्हें जिन्ना साहब के पाकिस्तान से कोई खास मतलब नहीं था क्योंकि उनकी राष्ट्रीयता तो भारत से जुडी हुई है इस संदर्भ में फुन्नन मियाँ कहते है कि "अ पाकिस्तान बनिबो करिहे त गंगउली से बहुत दूर बनिहे | तूं जाकर अपनी चरखी सँभालो अउर ताना ठीक करो | पाकिस्तान- आकिस्तान पेट भरन का खेल है |"

ई कउन किसिम का पाकिस्तान बन रहा भाई ?

भारत विभाजन के समय मुस्लिम लीग के प्रचारकों ने भारत के प्रत्येक गाँव एवं देहातों में जाकर यह अपील की कि मुस्लिम समाज अपना वोट मुस्लिम लीग को दे ताकि उनके लिए अलग से नए राष्ट्र की मांग रख सके | 'धर्म' का उपयोग 'राजनीती' के लिए किया जा रहा था 1946 के भाषण में जिन्ना ने कहा था कि "लीग और पाकिस्तान को वोट देने का मतलब है इस्लाम को वोट देना |" मुस्लिम लीग के प्रचाकारों से गंगौली गाँव भी अछुता नहीं रहा इस गाँव में अलीगढ़ से कुछ छात्र मुस्लिम लीग की वैचारिक्ता का प्रचार-प्रसार करने आये थे, इन्होंने इस गाँव के मुस्लिम समाज को अपने झांसे में ले लिया था इनका मानना था कि अंग्रेज चले जाने के पश्चात मुस्लिम समाज पर हिन्दुओं द्वारा शोषण एवं आत्याचार किया जायेगा | राही ने गंगौली गाँव के मुस्लिम समाज का चित्रण इतने शिद्दत के साथ करते है कि वह अपने वतन को छोड़कर कहीं ओर जाना ही नहीं चाहता है इस संदर्भ में हाजी साहब कहते है कि "हम तो अनपढ़ गँवार हैं | बाकी हमारे खयाल में निमाज खातिर पाकिस्तान- आकिस्तान की तनिको जरुरत ना है | निमाज के वास्ते खाली इमान की जरुरत है |" भारत के ग्रामीण भाग में रह रहे मुस्लिम समाज को नए राष्ट्र पाकिस्तान से कोई खास किस्म का लगाव नहीं था क्योंकि वह अपने गाँव, खेत-

खलियान एवं मिटटी से अलग नहीं होना चाहता | उसे भारत के हिन्दू भाइयों पर पूर्ण विश्वास है कि अंग्रेज भले ही भारत से चले जाये लेकिन उसकी सुरक्षा भंग नहीं होगी | जब अलीगढ़ के कुछ लोग कम्मो को कहते है कि "जब हिन्दू आपकी माँ- बहन को निकाल ले जायें तो फ़र्याद न कीजियेगा |" यह बात सुनकर कम्मो का घुस्सा सतावे आसमान पर चला जाता है लेकिन वह भली-भांति जनता है कि भारतीय संस्कृति घर आये हुए अथितियों का अपमान करना नहीं सिखाती है इसी कारण अपने क्रोध को नियंत्रित करते हुए कहता है कि "आप लोग जउन एह वखत हमरे दरवाजे पर ना होते, त टंगिया चीर देते धरके आप लोगन की !" कम्मो अपनी राष्ट्रीयता सिद्ध करते करने के लिए और अलीगढ़ से आये मुस्लिम लीग के प्रचारकों को गलत साबित करने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता है वह चमार से कहता है कि "ई लोग अलीगढ़ से हम्में ई बताये आये हैं कि हिंदुस्तान आज़ाद हो जाइहे, त तूं लोग हमरे माँ-बहिन को निकाल ले जइहो | कम्मो ने बात बता दी | अरे राम-राम ! चमार बिल्कुल घबरा गया है...जो माँ-बहिन के निकाल लिये जाने की बात सुनके राम-राम करने लगा |"

भारत का हिन्दू या मुस्लिम समाज हो उनमें साम्प्रदायिक सोच होती ही है, लेकिन चन्द लोगों की हरकतों के कारण पुरे जनसमुदाय को राष्ट्रभक्ति घेरे में लाकर खड़ा नहीं किया जा सकता | साहित्य के इतिहास में भारत विभाजन के समय मुस्लिम समाज का जो मन है वह क्या सोच एवं समज रहा था इसका सूक्ष्म चित्रण बखूबी किया गया है | राही मासूम रज़ा के के साहित्य में मुस्लिम समाज बड़े ही सहज रूप से भारत देश को स्वीकारता है | राही के पत्रों की विशिष्टता यह है कि वे अपने गाँव से अलग नहीं होना चाहते | वह यह भली-भांति जानते है कि इस गाँव में अमन एवं चैन के साथ रहा जा सकता है क्योंकि शहरों से ज्यादा ग्रामीण भागों में नफ़रत बीज बोने में समय अधिक अलग है इसीलिए राही अपने पात्र से कहलवाते है कि "नफ़रत और खौफ की बुनियाद पर बनने वाली कोई चीज मुबारक नहीं हो सकती | पाकिस्तान बं जाने के बाद भी गंगौली यहीं हिंदुस्तान में रहेगा और गंगौली फिर गंगौली है | तब अगर गयवा अहीर, लखना चमार और चिकुरिया भर ने आपसे पूछा कि उन्होंने तो आपसे कभी दुश्मनी नहीं की थी, फिर अपने पाकिस्तान को वोट क्यों दिया, तो आप क्या जवाब देंगे? |"

तो क्या पाकिस्तान मृत्यु- देश है?

पाकिस्तान का निर्माण अपने आप में दुर्भाग्य तो था ही और यहाँ रह रहे मनुष्यों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप बनाकर उभरा है क्योंकि पाकिस्तान का निर्माण धर्म एवं भाषा के आधार पर हुआ था | मनुष्य की संवेदना को भाषा, उनके इतिहास, संस्कृति आदि से अलग कर देना अप्राकृतिक कार्य दिखाई देता है | भारत का एक बड़ा तबका पाकिस्तान की ऐवज हिंदुस्तान में ही रहना चाहता है | राही के 'आधा गाँव' में एक प्रसंग में कहते है कि जब सईदा को यह ज्ञात नहीं होता कि जब कोई व्यक्ति पाकिस्तान चला जाता है तो क्यों वापस नहीं आता ? क्योंकि उसकी मानसिक्ता यह बं चुकी थी कि जब कोई व्यक्ति युद्ध पर जाता है तो वह वापस आता है लेकिन पाकिस्तान से क्यों नहीं आता तो वह कहती है 'तो क्या पाकिस्तान मृत्यु- देश है?' 'आधा गाँव' में मुस्लिम लीग का विरोध राही अनेक पत्रों के माध्यम से करवाते है लेकिन इनके पत्रों को मुस्लिम लीग के प्रचारकों से अवेहेलना का सामना करना पड़ता है | भारत आज़ाद होकर इतने वर्ष हो चुके है लेकिन आज भी रोजमर्रा के जीवन में हिन्दू-मुसलिम समाज के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न होती रहती है | भारतीय मुसलमान को आये दिन अपने देशभक्ति का प्रमाणपत्र साबित करना पड़ता है | इस संदर्भ में शानी ने लिखा है कि "अगर आप भारतीय मुसलमान हैं और चाहते हैं कि आपकी बुनियादी ईमानदारी पर शक न किया जाए तो देश प्रेम और राष्ट्रीयता का झुनझुना बहुत जरुरी है |" भारत देश सेक्युलर होते हुए भी अल्पसंख्यक समाज को राष्ट्रभक्ति का सबुत देना पड़ता है, यह स्थिति बहुत ही विडंबनात्मक है | आज भी उनके पहचान को लेकर प्रश्नचिन्ह लगते है कि कहीं यह पाकिस्तान का सीमावर्ती चौकीदार एवं हितैषी तो नहीं है ? इनमें भारत देश के प्रति वफ़ादारी की भावना नहीं होती है इस तथाकथित तथ्य को ख़ारिज करते हुए भारत का मुसलमान प्रत्येक युद्ध में दृढ़ता से भारत का साथ दिया है | भारतीय मुसलमान के विरुद्ध यह बात फैलायी गई की मुसलमान भारत देश का निवासी नहीं हो सकता लेकिन राही मासूम रज़ा 'आधा गाँव' की भूमिका में

कहते हैं कि "जनसंघ का कहना था कि मुसलमान यहाँ के नहीं हैं | मेरी क्या मजाल कि मैं उसे झुठलाऊँ ! मगर यह कहना ही पड़ता है कि मैं गाजीपुर का हूँ | गंगौली से मेरा संबंध अटूट है | वह एक गाँव ही नहीं है, वह मेरा घर भी है | घर ! यह शब्द दुनिया की हर बोली और भाषा में यह उसका सबसे खुबसूरत शब्द है | इसीलिए मैं उस बात को फिर दुहराता हूँ | क्योंकि वह केवल एक गाँव ही नहीं है | क्योंकि वह मेरा घर भी है |...चाहे मेरे दादा कहीं के रहे हो | और मैं किसी को यह हक़ नहीं देता कि वह मुझसे यह कहे "रही ! तुम गंगौली के नहीं हो | इसीलिए गंगौली छोड़कर, मिसाल के तौर पर, रायबरेली चले जाओ |" क्यों चला जाऊँ साहब मैं ? मैं तो नहीं जाता |" भारत का प्रत्येक मुसलमान अपने गाँव से मोहब्बत करता है | राही अपने कथा साहित्य के माध्यम से उन ताकतों का विरोध करते आ रहे है जो भारतीय समाज की साझा संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हो | राही बार-बार यह कहते है कि "मैं गंगौली का हूँ... हिंदुस्तान सिर्फ आप जैसे हिन्दुओं का नहीं है हिंदुस्तान मेरा भी है और वो किसी भी तरह आपसे कम नहीं है |" जिस बेबाकी से अपनी हिंदुस्तानियत की पहचान राही देते है उसी अंदाज में शानी ने भी सांप्रदायिक ताकतों का विरोध करते हुए कहते है कि "मैं यह नहीं मनाता कि मेरे पुरखें कहीं ईरान- तुरन से आये होंगे, वे वहाँ बस्तर के जंगलों में कहाँ ऐसी- तैसी कराने पहुंचाते ? हो सकता है वे हिन्दू रहे हो | मगर तीन पीढ़ियों से मैं मुसलमान हूँ और यही बने रहना चाहता हूँ |" भारत स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् मुस्लिम समाज की अस्मिता का प्रश्न प्रबल रूप से उभरकर आया | सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में भी मुस्लिम समाज की पीड़ा का चित्रण किया गया है उनकी पिछडेपण का कारण शिक्षा के स्तर को बताया गया है | इसी रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक और सार्वजनिक मेल-जोल भारतीय मुसलमानों के लिए काफी निराशाजनक रही है | मुसलिम समाज की राष्ट्रभक्ति के संदर्भ में सच्चर कमेटी यह दावा करती है कि "समाज की समझ का एक पहलू 'देशभक्ति' से जुड़ा है | वो 'देश-द्रोही' समझे जाने तथा साथ ही 'मनाए' जाने के दोगुने बोझ से लदे हैं | जहाँ मुस्लिमों को रोज ही यह साबित करना पड़ता है कि वे 'देश- द्रोही' और 'आतंवादी' नहीं है |"

राही के 'आधा गाँव' एवं अन्य उपन्यासों में भारतीय मुस्लिम समाज की आंतरिक अंतर्द्वंद को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है | इस उपन्यास की भाषा आंचलिक है उत्तर भारत के भोजपुरी पूर्वांचल को इस उपन्यास में फिर से जीवंत किया गया है | यह उपन्यास इतिहास की प्रमाणिकता लिए उन तथ्यों को उजागर करता है जो मुस्लिम समाज की ओर देखने की पारंपरिक सोच को बदलने में मदत करता है | 'आधा गाँव' उपन्यास इस अर्थ में महान कृति है कि वह जिन महाकाव्यात्मक तत्व को ग्रहण करता है वह आधुनिक हिंदी साहित्य की विरल धरोहर है | साहित्य में 'गोदान', 'मैला आँचल' के बाद 'आधा गाँव' उपन्यास है जिससे भारत की पूर्ण छवि उभरकर सामने आती है |

संदर्भ सूची-

1 राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, आवृति 2000, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ, 242
2 वही, पृ, 243
3 वीरेन्द्र यादव, उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, 2017, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ 79
4 राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पृ 257
5 बिपिन चंद्रा, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 1998, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, पृ. 350
6 राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पृ 242
7 वही, पृ. 240
8 वही, पृ. 240
9 वही, पृ. 240
10 वही, पृ. 251
11 शानी, एक शहर में सपने बिकते हैं, 1984, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली, पृ. 46
12 राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पृ. 290
13 राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, भूमिका से
14 राजेन्द्र यादव, स्थगित यात्राएँ, 1998, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 19
15 सच्चर कमेटी रिपोर्ट, भारत सरकार, 2006, पृ. 11